आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:31/12/2022; Published:31/01/2023

तुम्हारा आना मतलब वसंत

डॉ. सुमन शर्मा

मूल: डॉ. गीता गीडा (गुजराती)

हड्डियों को कंपकंपाती कड़कड़ाती ठंड का अंत,
तुम आये ज्यों आया वसंत।

बरसों से इंतज़ार में पथरायीं आँखों का अंत,
तुम आये ज्यों आया वसंत।

हृदय की दग्ध विरह वेदना का अंत,
तुम आये ज्यों आया वसंत।

मन उपवन में छाया आनंद,पतझड़ का हुआ अंत,
तुम आये ज्यों आया वसंत।

रची रूपों की रंगोली, शुष्कता का हुआ अंत,
तुम आये ज्यों आया वसंत।

सुन्दरता का साम्राज्य चहुँओर,कुरूपता का हुआ अंत,
तुम आये ज्यों आया वसंत।

****